Read India Books
मेड इन
इंडिया
लेखन एवं चित्रांकन
ओलिविया फ्रेज़र
RGF Pratham
SERIES

ORIGINAL STORY (*ENGLISH*) HANDMADE IN INDIA BY OLIVIA FRASER
HINDI TRANSLATION © RAJIV GANDHI FOUNDATION-PRATHAM BOOKS, 2004
ILLUSTRATIONS © OLIVIA FRASER

FIRST EDITION 2004

ILLUSTRATIONS BY OLIVIA FRASER
DESIGN BY VIVEK SAHNI DESIGN
HINDI TRANSLATION BY PRATHAM BOOKS TEAM

ISBN. 81-8263-066-5

REGISTERED OFFICE: PRATHAM BOOKS
930, 4TH CROSS, 1ST MAIN, MICO LAYOUT, STAGE 2, BANGALORE 560 076

REGIONAL OFFICES IN MUMBAI AND NEW DELHI

The text and the illustrations of this book are the artist's record and impressions of her journey across India. The maps are to be viewed as artistic representations and not as maps representing boundaries to any degree of accuracy.

TYPESETTING BY PRATHAM BOOKS
LAYOUT BY VIVEK SAHNI DESIGN

PRINTED BY INTERNATIONAL PRINT-O-PAC LIMITED, NEW DELHI

PUBLISHED BY PRATHAM BOOKS
www.prathambooks.org

लेखन एवं चत्रांकन

ओलिविया फ्रेज़र

हिन्दी अनुवादः प्रथम पुस्तक समूह

RGF Pratham
SERIES

INDIA
N
W
E
S
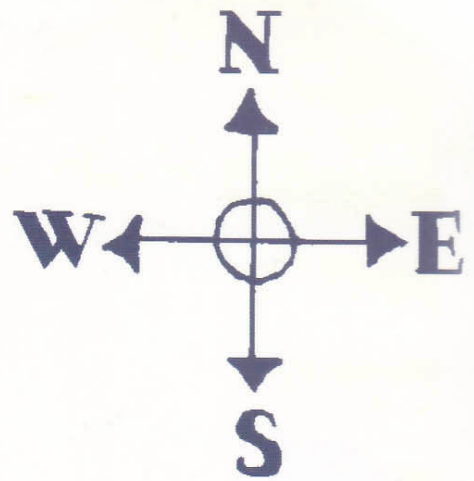
अगर तुम हिन्दुस्तान में घूमो, **उत्तर** से **दक्षिण**,

पूरब से **पश्चिम**-हर जगह लोग कुछ न कुछ बनाते हुए

दिखायी देंगे - खेतों में, सड़कों के किनारे, खुले दरवाज़ों के अन्दर,

बरामदों में।

लोग खाने की चीज़ें बनाते हैं, पहनने की चीज़ें बनाते हैं और बेचते हैं। इससे

उनका फ़ायदा होता है और देश की भी तरक्की होती है।

आओ चलो, घूमें और देखें...

हिमाचल प्रदेश की पहाड़ियों में मुझे ये दो औरतें मिलीं। हिमाचल प्रदेश भारत के **उत्तर** में है। क्या तुम बता सकते हो कि ये औरतें क्या कर रही हैं?

मैंने भेड़ के साथ उनका चित्र बनाया है क्योंकि वे **भेड़ की ऊन** से चीज़ें बना रही हैं। एक औरत ऊन का मुलायम धागा बना रही है। दूसरी कई रंगों का एक ऊनी 'स्वेटर' **बुन** रही है। ऊन को इन्द्रधनुष के रंगों में रंगा जा सकता है। लेकिन मुझे वह ज़्यादा अच्छी लग रही है जिसने भूरे रंग की पोशाक पहनी है — क्योंकि उसका रंग भेड़ से मिलता जुलता है।
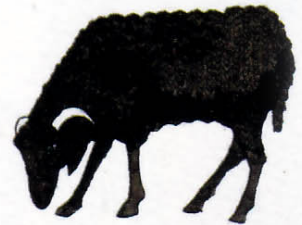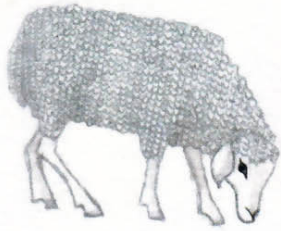
भारत के हर कोने में स्त्रियाँ काम करती दिखाई देती हैं। कभी खाना पकाती हुई, कभी पानी निकालती हुई...

इन औरतों को मैंने **हरियाणा** में देखा।

हरियाणा देश के **उत्तरी** भाग में है।

कुएँ का पानी आम तौर पर पीने के लिए सबसे साफ़ और सुरक्षित है क्योंकि यह ज़मीन की गहराइयों से आता है और ज़मीन पर पड़ी गंदगी और प्रदूषण से दूर रहता है।

वे उत्तर भारत की ख़ास पोशाक शलवार और कमीज़ पहने हुए हैं। देखो तो, उन्होंने अपने सिर पर किस तरह पानी के दो घड़े टिका रखे हैं।

क्या तुम भी ऐसा कर सकते हो?
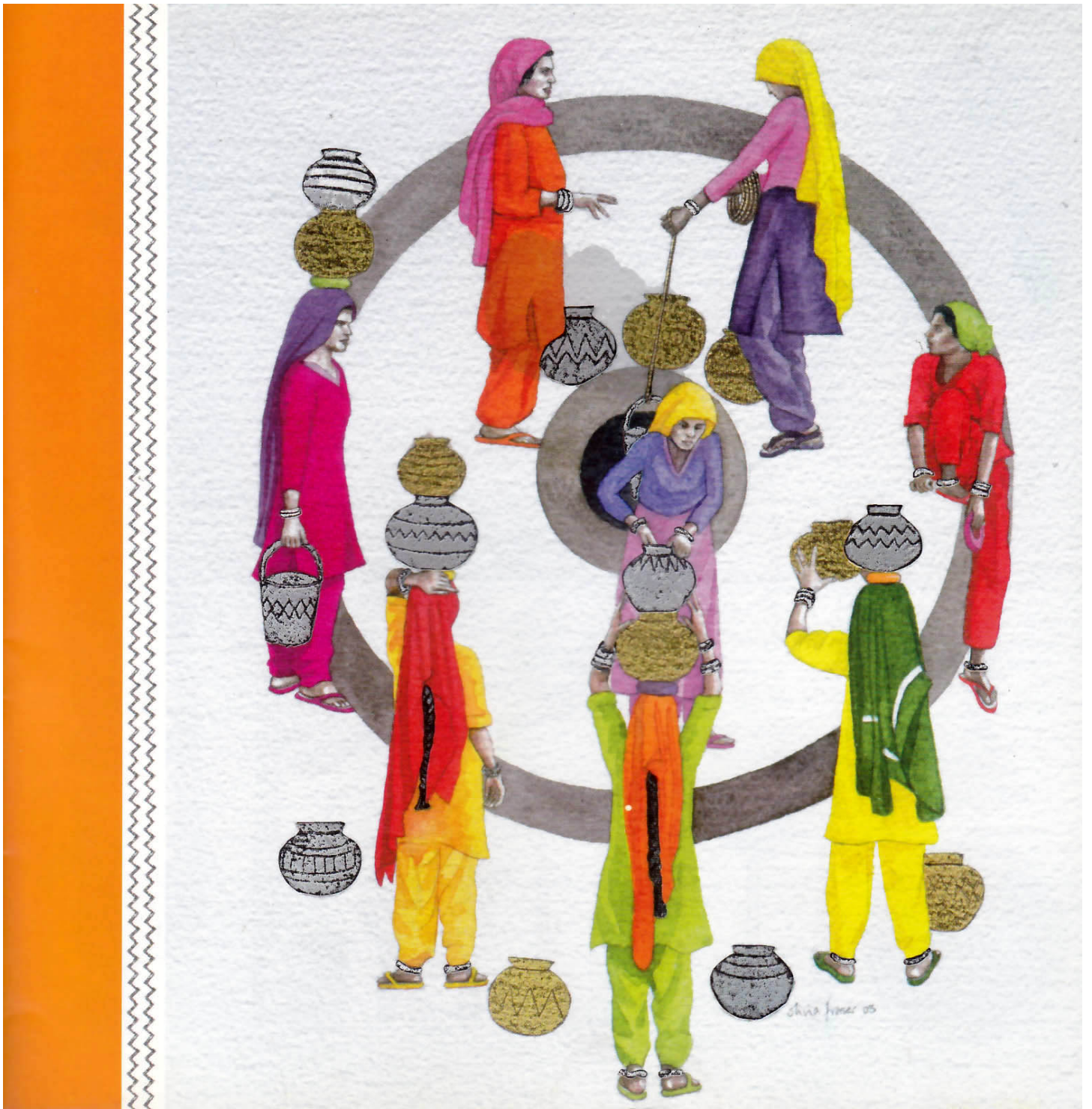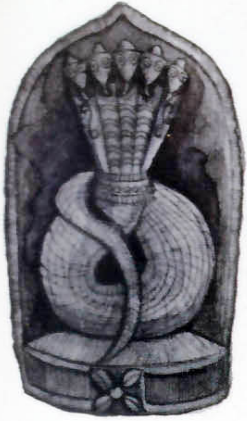
मैंने **दक्षिण** भारत में **कर्नाटक** में एक आदमी को बाहर बैठकर काम करते हुए देखा। वह एक **मूर्तिकार** है और छैनी-हथौड़े की मदद से किसी देवता की पत्थर की मूर्ति बना रहा है।

क्या तुम बता सकते हो यह मूर्ति किसकी होगी?*
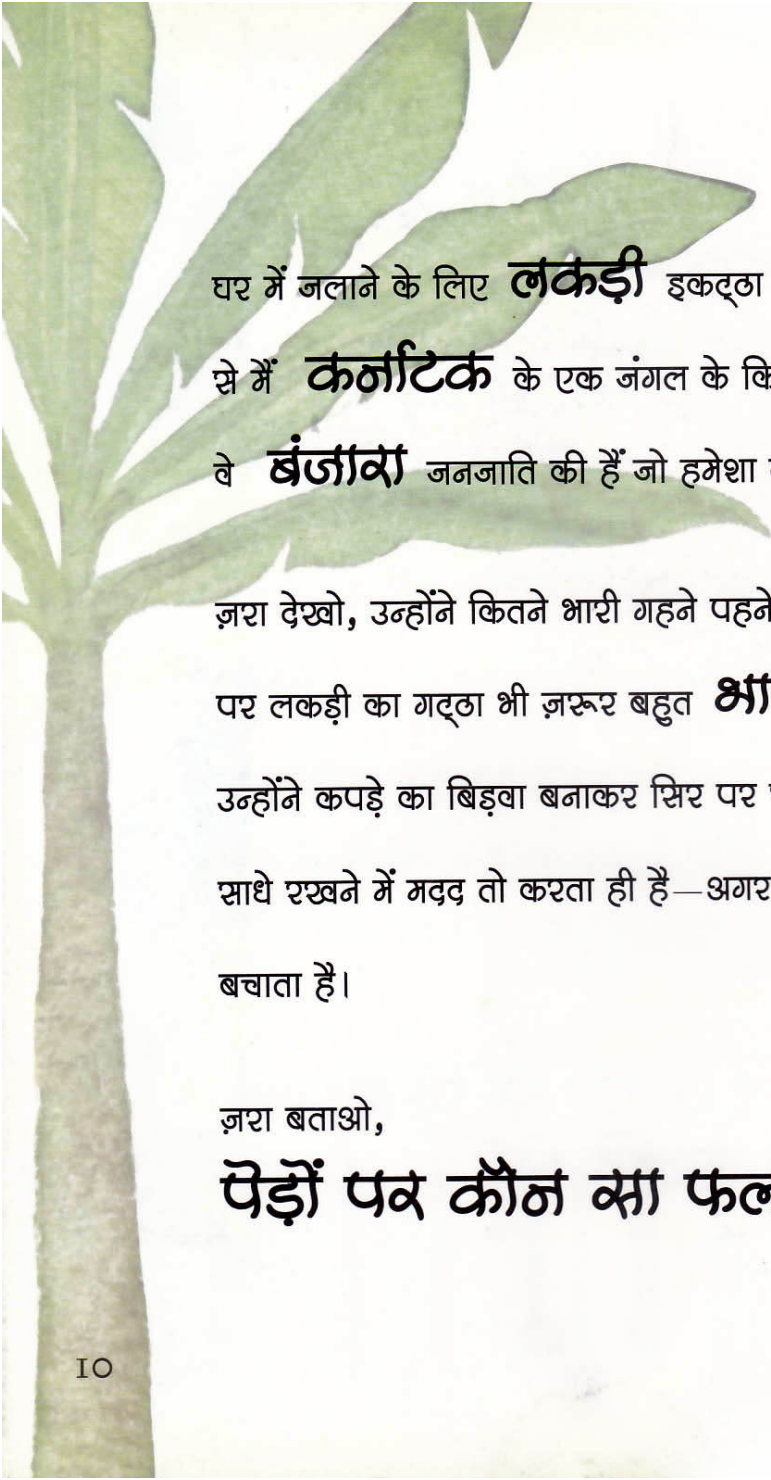
मैंने उन औज़ारों का चित्र बनाया है जिनका इस्तेमाल वह अपने काम में करता है। एक कतार में रखे कितने अच्छे लगते हैं! उसके चारों तरफ़ कुछ लोगों की और जानवरों की मूर्तियाँ हैं।

क्या तुम उनमें से किसी को पहचान सकते हो?

*गणेश

घर में जलाने के लिए **लकड़ी** इकट्ठा करती उन औरतों से मैं **कर्नाटक** के एक जंगल के किनारे मिली थी। वे **बंजारा** जनजाति की हैं जो हमेशा घूमते रहते हैं।

ज़रा देखो, उन्होंने कितने भारी गहने पहने हैं। और सिर पर लकड़ी का गट्ठा भी ज़रूर बहुत **भारी** होगा। देखो किस तरह उन्होंने कपड़े का बिड़वा बनाकर सिर पर रखा हुआ है जो बोझ को साधे रखने में मदद तो करता ही है—अगर लकड़ी में काँटे हैं तो उनसे भी बचाता है।

ज़रा बताओ,

पेड़ों पर कौन सा फल लगा है?
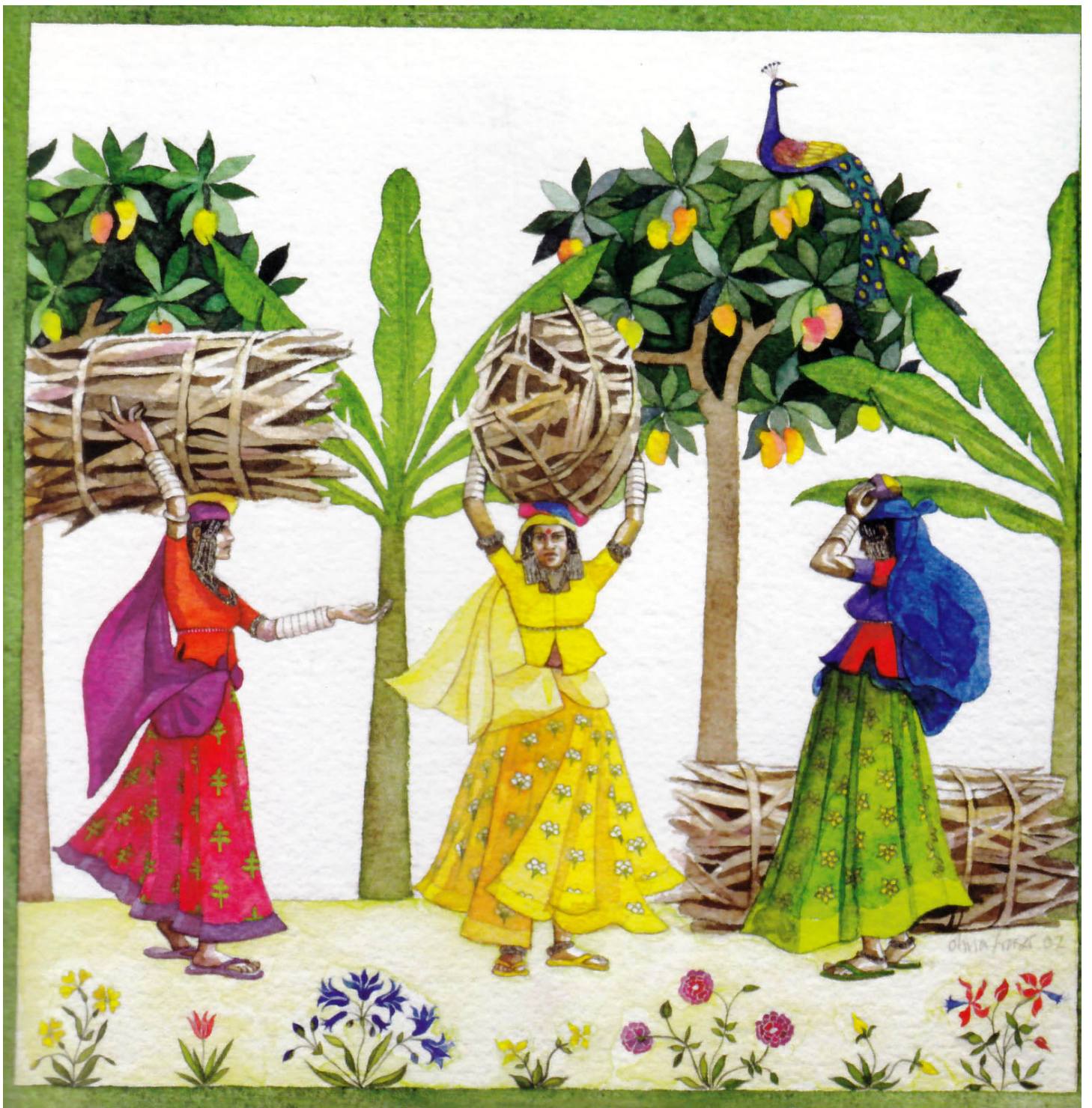
ये औरतें **कर्नाटक** से हैं। वे **चावल उगाने** के काम में लगी हैं। चावल **धान** के पौधों से आता है।

ये औरतें टखनों तक पानी में खड़े हो कर धान के **पौधे रोप** रही हैं। पौधों को थोड़ी-थोड़ी दूर पर रोपा जाता है जिससे वे अच्छी तरह बढ़ें और पैदावार अच्छी हो।

देखो, औरतों ने अपनी साड़ी को ऊपर चढ़ाकर खोंस रखा है, ताकि पानी में भीग न जाये।

मुझे लगता है, शाम होते-होते उनकी पीठ दुखने लगती होगी, है न?

भारत के **दक्षिण-पश्चिम** तट पर **गोआ** है। वहाँ मैंने रेल की पटरियाँ बिछाते इन लोगों को देखा था। क्या तुम तरह-तरह के औज़ारों को देख रहे हो जिनका इस्तेमाल वे करते हैं?

इन कामगारों की पोशाक में भारत के झंडे के रंग हैं—केसरिया, सफ़ेद और हरा।

तुम उस आदमी को देख रहे हो जो सभी कामगारों का मुखिया है?

मैंने अपने चित्र में रेल की पटरी को घड़ी के आकार में बनाया है। क्योंकि रेलगाड़ी को समय से चलना ज़रूरी है।
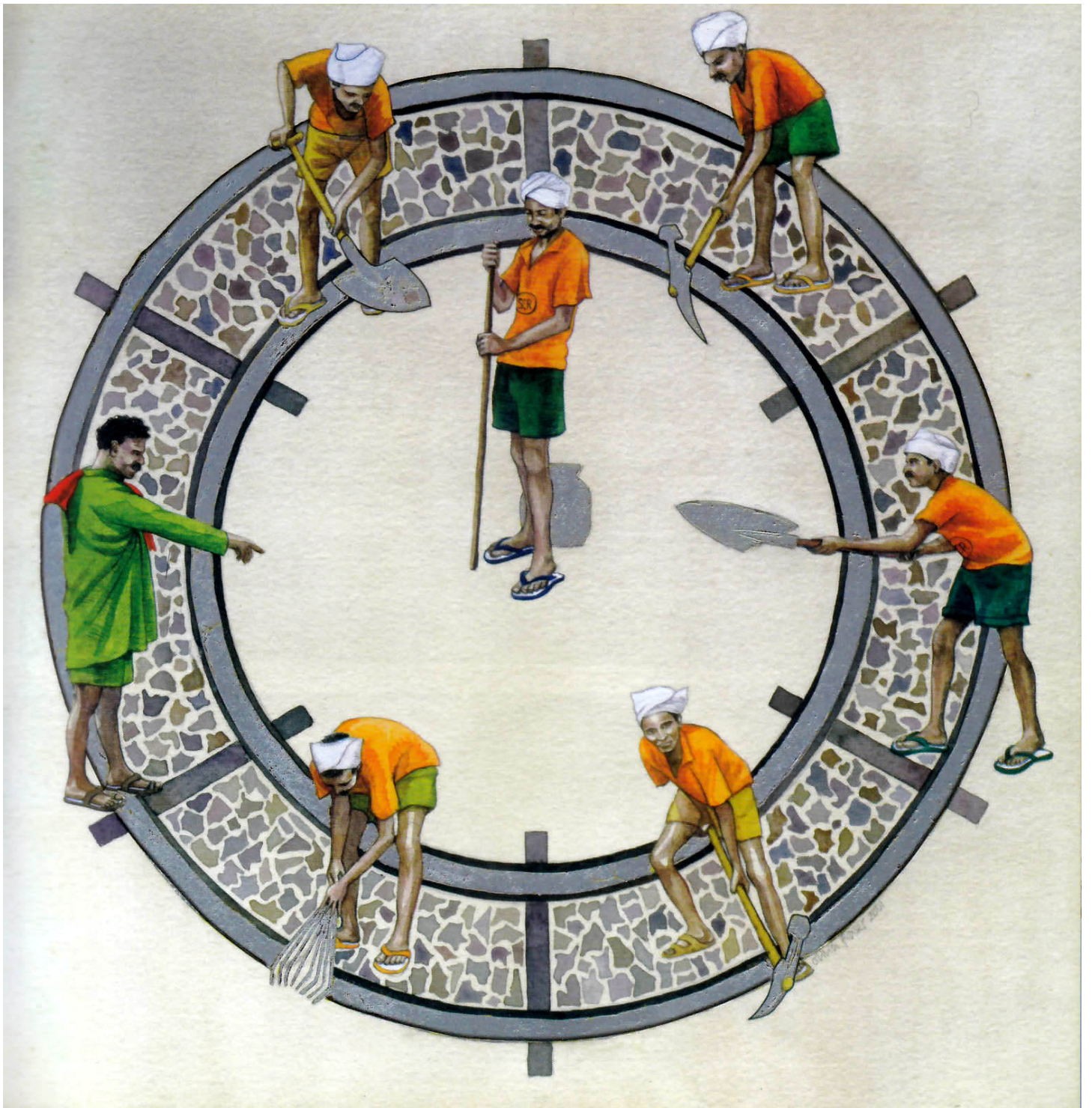
में **उड़ीसा** के एक ऐसे गाँव में गयी जहाँ सिर्फ़ शिल्पकार रहते हैं। उड़ीसा **पूर्व** में है। सभी लोग बाहर बैठकर कोई न कोई चीज़ **बना** रहे थे। यह औरत **कागज़ की लुगदी** से बनी चीज़ों को रंग रही थी। उसने भगवान **जगन्नाथ** की रंग-बिरंगी मूर्तियाँ बनाई थीं।

क्या तुम जानते हो जगन्नाथ किसे कहते हैं? श्रीकृष्ण को उड़ीसा में लोग जगन्नाथ कहते हैं।

देखो तो वह औरत कितनी तरह के नमूने और रंग इस्तेमाल करती है। उसे आशा है कि उसकी बनायी चीज़ें लोग खरीद कर ले जायेंगे। **उसके बनाये हाथी वाले मुखौटे मुझे अच्छे लगे थे। तुम्हें कौन से पसंद हैं?**

पूर्व में बंगाल की एक धूलभरी सड़क के किनारे में इस आदमी से मिली थी—यह **ठठेरा** है और टीन की पट्टियों से बाल्टी बना रहा है।

पहले उसने टीन की पट्टी में छोटे-छोटे सुराख किये और नमूने बनाये।

फिर उसने टीन को बेलनाकार मोड़ा और दोनों किनारों पर छोटी कील ठोक कर जोड़ दिया। आख़िर में इसी तरह उसने बाल्टी के नीचे पेंदी लगाई।

बाल्टी बहुत अच्छी दिख रही है, है न?

GOLD
GOLD

ये लोग **ईंट** बना रहे हैं। देखो ईंटों पर **'गोल्ड'** छपा हुआ है। 'गोल्ड' यानि **सोना।** ऐसा लगता था जैसे वे पकाई हुई मिट्टी के बजाय सोने की टिक्कियाँ हों।

ये औरतें ईंट बनाने के लिए ख़ासतौर से तैयार की गयी मिट्टी को लकड़ी के साँचों में भरकर ढाल रही हैं। साँचे में भरने के बाद वे फ़ालतू मिट्टी को लोहे की पट्टी से छाँट देती हैं। ईंटों को विशेष भट्ठों में **25 दिनों** तक पकाया जाता है।

इन भट्ठों में मीनार जैसी ऊँची-ऊँची **चिमनियाँ** होती हैं। पूरे भारत के देहाती इलाकों में घूमते हुए तुम इन चिमनियों को देख सकते हो। इन ईंट बनाने वालों को मैंने **बंगाल** में देखा।
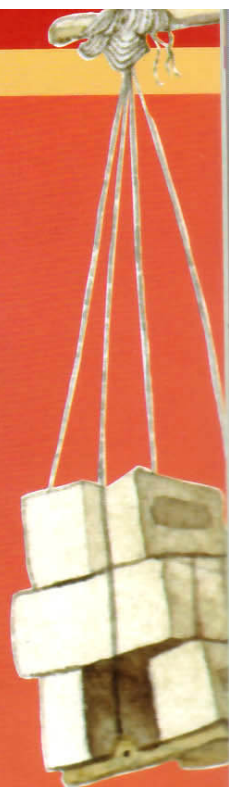
बंगाल में घूमते हुए मैंने बहुत से छोटे-छोटे **पोखर** देखे। इन **मछुआरिनों** को **जाल** लिए और सिर पर छोटी-छोटी **टोकरियाँ** रखे देखा। टोकरियों में आज की ताज़ी मछलियाँ थीं।

मैंने उन्हें मछली पकड़ते हुए भी देखा। कमर तक पानी में बहुत सारी औरतें कतार बनाकर खड़ी हो गईं। उन्होंने बाँस में मढ़े जाल के किनारों से पानी को ज़ोर-ज़ोर से हिलोरा। उसके बाद एक साथ वे सब अपने जाल पानी में नीचे डुबातीं और इस अफ़रा-तफ़री में कोई मछली जाल में फँस गयी तो उसे निकाल लेतीं। **मछली जितनी बड़ी है, मैंने चित्र में उन्हें उतना ही बड़ा बनाया है।**

मछलियों को लोग तल कर चटपटा खाना पसंद करते हैं।

तुम्हें भी पसंद है?

fraser 2000
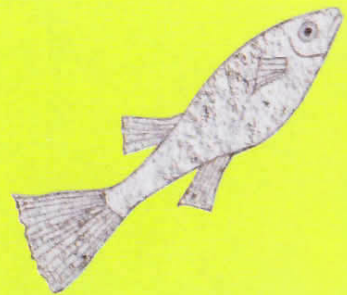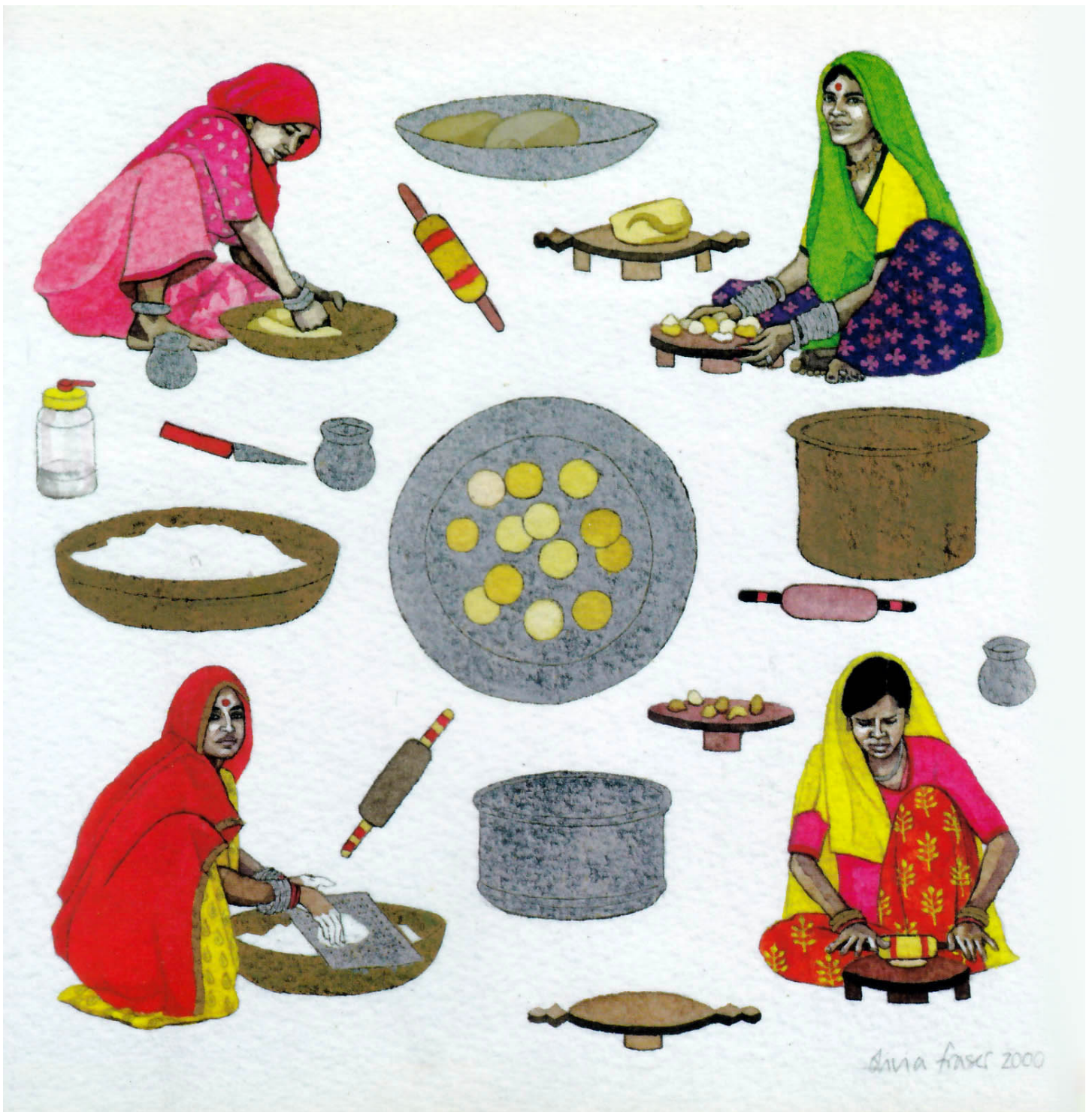
मैं **राजस्थान** में एक शादी में गयी। राजस्थान **पश्चिम** में है। एक बड़ी भारी दावत की तैयारियों को भी देखा।

ये औरतें **रोटियाँ** बना रही थीं। वे एक गोल घेरे में बैठी थीं, हर कोई रोटी बनाने के काम में हाथ बँटा रहा था।

एक औरत छलनी से आटे को **छान** रही थी।
दूसरी उसमें पानी मिलाकर आटे को **माँड** रही थी।
उसके बगल में बैठी औरत आटे की छोटी-छोटी **लोइयाँ** बना रही थी, रोटियाँ **बेलने** के लिए।
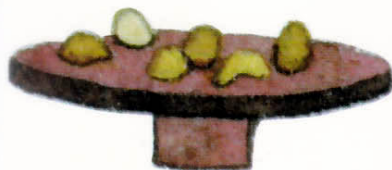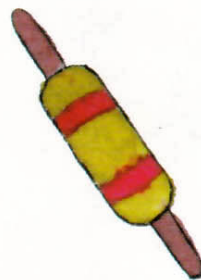
बेली हुई रोटियों को झटपट
एक बड़ी-सी परात में रखकर रसोई घर में सिकने के लिए पहुँचा दिया जाता।
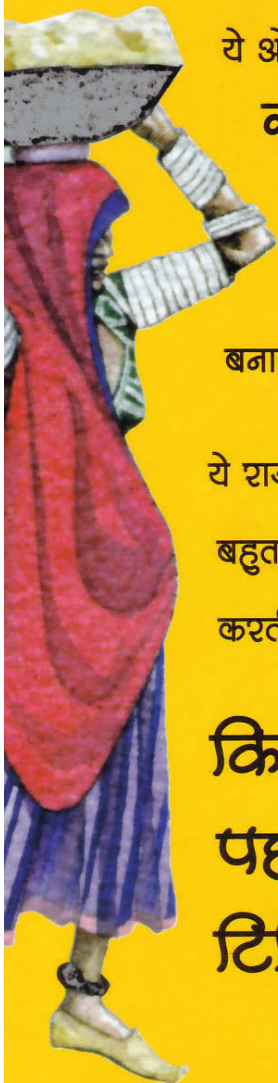
ये औरतें **सड़क बनाने** का काम करती हैं। मैंने उन्हें **राजस्थान** में पथरीली ज़मीन को काट-काटकर समतल करते हुए देखा था। रेगिस्तान के बीच से रास्ता बनाने के लिए वे अपनी गेंती और बेलचे इस्तेमाल करती हैं। बाद में तारकोल वाली पक्की सड़क बनायी जायेगी।

ये राजस्थान की **रबारी** जनजाति की हैं। इनके रंग-बिरंगे कपड़े बहुत अच्छे लगते हैं। कितनी ताकत है इनमें कि यह इतनी मेहनत का काम करती हैं!

किस औरत ने सबसे ज़्यादा चूड़ियाँ पहनी हुई हैं? चित्र में क्या तुम एक टिफ़िन बाक्स को ढूँढ सकते हो?

NORTH
WEST
EAST
INDIA
SOUTH
N
W
E
S

पिछले दस साल से **ओलिविया फ्रेज़र** पूरे हिन्दुस्तान में घूमते हुए चित्र बनाती रही हैं। कितने ही रंग बिरंगे, दिलचस्प लोगों से उनकी मुलाकात हुई है। यह किताब हमें भी उनसे मिलने का मौका देती है।

MRP. Rs 25

ISBN 81-8263-066-5